अंक 01

मार्च 2026

चयनिका

भारत का भरोसेमंद मित्र - रूस

एक ऐतिहासिक, भरोसेमंद और रणनीतिक साझेदार

पीढ़ियों की पाठशाला

जेन ज़ी से जेन अल्फा तक बदलता बचपन

प्रदूषण

कारण, बचाव एवं उपचार

सत्यमेव जयते

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल
ASRB 1973

अध्यक्ष, कृ.वै.च.मं. की कलम से ...

प्रिय पाठकों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल की हिंदी पत्रिका (2025–26) का प्रकाशन किया जा रहा है। कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा के उपयोग को लेकर अत्यंत सजग है एवं हमारे कर्मचारियों एवं अधिकारियों का निरंतर प्रयास रहता है कि यह कार्यालय राजभाषा के उपयोग में अग्रणी पायदान पर रहे | इस पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा |

मेरा यह मानना है कि हर संस्थान में प्रतिभा संपन्न लोग होते हैं, परन्तु कार्यालय एवं जीवन की अन्य व्यस्तताओं में उन्हें अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का अवसर नहीं मिल पाता है | इस तरह के प्रयासों से न केवल उन्हें अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का मौका मिलता है, अपितु उनकी प्रतिभा में और निखार आने के साथ ही यह अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिलती है |

मुझे विश्वास है कि इस प्रकाशन की सफलता से उत्साहित हो भविष्य में भी कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल की टीम द्वारा इस तरह के प्रयासों को जारी रखा जायेगा |

मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल एवं सभी सहयोगियों को उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ |

सभी पाठकों को मेरी शुभकामनाएँ |

(डॉ. संजय कुमार)
अध्यक्ष,
कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल

सत्यमेव जयते

सचिव, कृ.वै.च.मं. की कलम से ...

प्रिय पाठकों,

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल की पत्रिका के विमोचन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह उपलब्धि हमारी टीम के सामूहिक प्रयासों, समर्पण एवं प्रतिबद्धता का परिणाम है।

मैं कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के अध्यक्ष डॉ. संजय कुमार के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनका मार्गदर्शन हमें हमेशा मिलता रहता है | मै मंडल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके निरंतर सहयोग एवं महत्वपूर्ण योगदान के बिना इस पहल को साकार करना संभव नहीं था | आप सभी के समन्वित प्रयासों ने इस पत्रिका को उत्कृष्ट रूप से स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में ज्ञानवर्धन एवं विचार-विनिमय को प्रोत्साहित करने का प्रभावी माध्यम सिद्ध होगी |

आप सभी के सहयोग एवं समर्पण के लिए पुनः हार्दिक धन्यवाद |

गरिमा श्रीवास्तव
सचिव एवं अध्यक्ष (राजभाषा)
कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल

सत्यमेव जयते

संपादक की कलम से ...

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल की राजभाषा पत्रिका 'चयनिका' के पहले अंक का प्रकाशन करते हुये अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है । पत्रिका में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की लेखनी के माध्यम से दिया गया योगदान सराहनीय है । रचनाएँ अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ भाषा में पकड़ को भी मजबूत बनाती हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी यह क्रम जारी रहेगा। मैं रचनाकारों को हिंदी के प्रति उनकी अतुलनीय निष्ठा के लिए और कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के अध्यक्ष, डॉ. संजय कुमार एवं सचिव व अध्यक्ष (राजभाषा) को उनके मार्गदर्शन हेतु हृदय से धन्यवाद देता हूँ ।

मैं श्रीमती निकिता मौर्या का विशेष धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनके अथक प्रयास से बहुत ही कम समय में इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया |

रवीन्द्र नाथ

(रवीन्द्र नाथ)
अवर सचिव (राजभाषा)
कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल

सत्यमेव जयते

विषय सूची

	विषय	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
	परिचय			
1.	पीढ़ियों की पाठशाला	लेख	श्रीमती मोनिका मोहले, अवर सचिव	1
2.	अभिमान	कविता	श्रीमती सुशीला तोमर, अवर सचिव	3
3.	ऑपरेशन सिंदूर	लेख	श्री अनुराग अरोड़ा, अवर सचिव	4
4.	वक्त बूढ़ा हो चला मेरे साथ	कविता	श्रीमती रचना उपाध्याय, अनुभाग अधिकारी	7
5.	आत्मनिर्भर भारत	लेख	श्री हिमांशु गौतम, सहायक अनुभाग अधिकारी	11
6.	वो तो मेरी माँ थी	कविता	श्री विजय कुमार, डी.ई.ओ.	14
7.	प्रदूषण	लेख	श्री हिमांशु गौतम, सहायक अनुभाग अधिकारी	15
8.	लज्जा को लाज सताती है	कविता	श्रीमती सुशीला तोमर, अवर सचिव	18
9.	आपदा प्रबंधन	लेख	श्री सतीश पाल सिंह, अनुभाग अधिकारी	19
10.	नौकरी की जिन्दगी	कविता	श्री विजय कुमार, डी.ई.ओ.	21
11.	मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण	लेख	श्री अज़मत हुसैन, सहायक अनुभाग अधिकारी	22
12.	रूस हमारा भरोसेमंद मित्र	लेख	श्री सौरभ मुद्गल, डी.ई.ओ.	24
13.	किरदार एक बेटे का	कविता	श्री विजय कुमार, डी.ई.ओ.	27
14	भरतनाट्यम	लेख	सुश्री हेमा गौतम, डी.ई.ओ.	28
15.	समय स्मृति			31

परिचय

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (कृ.वै.च.मं.) कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत एक प्रमुख भर्ती एजेंसी है और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (भा.कृ.अनु.प.) के लिए वैज्ञानिकों और अन्य अधिकारियों की भर्ती के लिए उत्तरदायी है |

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (कृ.वै.च.मं.) की स्थापना सन् 1973 में भारत सरकार द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प.) के तहत एक स्वतंत्र भर्ती निकाय के रूप में की गई थी । अगस्त 2018 से मंडल को भा.कृ.अनु.प. से अलग कर दिया गया है । अब यह मंडल भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) के एक संलग्न कार्यालय के रूप में कार्य कर रहा है। अधिदेश के अनुसार, इसकी प्राथमिक भूमिका भा.कृ.अनु.प. और देश भर में इसके अनुसंधान संस्थानों के लिए प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों और प्रबंधन कर्मियों की भर्ती करना है। मंडल ए.आर.एस. वैज्ञानिकों के लिए कैरियर एडवांसमेंट स्कीम सहित मानव संसाधन प्रेरण और विकास से संबंधित नीतियों को विकसित कर उन्हें लागू करने में परिषद की सहायता और सलाह भी देता है। मंडल ने राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान और शिक्षा प्रणाली (एन.ए.आर.ई.एस.) की बढ़ती जरूरतों की पूर्ति हेतु प्रतिभा खोज रणनीतियों को बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयास किया है।

अधिदेश

- भा.कृ.अनु.प. की कृषि अनुसंधान सेवा (ए.आर.एस.) में पदों पर भर्ती तथा ऐसे अन्य पदों एवं सेवाओं पर भर्ती, जिन्हें भा.कृ.अनु.प. के अध्यक्ष द्वारा समय-समय पर निर्दिष्ट की जाती हैं।
- भा.कृ.अनु.प. के अध्यक्ष द्वारा अपेक्षित पदोन्नति सहित कार्मिक मामलों में परिषद को अन्य सहायता प्रदान करना।
- कृ.वै.च.मं. के माध्यम से भर्ती किए गए या मंडल के परामर्श से परिषद द्वारा नियुक्त किए गए कार्मिकों से संबंधित अनुशासनात्मक मामलों पर परिषद को सलाह देना।

अखिल भारतीय सेवा के रूप में ए.आर.एस के सृजन के बाद, मंडल को निम्नलिखित अतिरिक्त जिम्मेदारियां भी सौंपी गईं:

- अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से ए.आर.एस. के प्रवेश स्तर के वैज्ञानिक ग्रेड में भर्ती।
- ए.आर.एस. के प्रारंभिक गठन के तहत भा.कृ.अनु.प. के मौजूदा वैज्ञानिकों को ए.आर.एस. में शामिल करना |
- ए.आर.एस. के वैज्ञानिकों को मूल्यांकन/पदोन्नति और अग्रिम वेतन वृद्धि प्रदान करना।
- तकनीकी कार्मिक, प्रशासनिक और लेखा प्रबंधन पदों की भर्ती, जैसे कि प्रशासनिक अधिकारी/वित्त एवं लेखा अधिकारी और सहायक निदेशक (राजभाषा)।

मंडल 60 अनुमोदित विषय क्षेत्रों में राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) भी आयोजित करता है, जो राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में सहायक प्रोफेसर/व्याख्याता के रूप में नियुक्ति चाहने वाले उम्मीदवारों के लिए एक पूर्वापेक्षित योग्यता है।

पीढ़ियों की पाठशाला

पीढ़ियों की पाठशाला : जेन ज़ी से जेन अल्फ़ा तक बदलता बचपन हर दौर का बचपन अपने साथ नई चुनौतियाँ और नई संभावनाएँ लेकर आता है। आज जब हम स्कूलों, कॉलेजों और घरों में बच्चों के व्यवहार और सीखने के तरीकों को देखते हैं, तो स्पष्ट हो जाता है कि एक ही समाज में रहते हुए भी पीढ़ियों का अनुभव कितना भिन्न हो सकता है। जेन ज़ी और जेन अल्फ़ा इसी परिवर्तन की दो महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं।

जेन ज़ी उस दौर की पीढ़ी है जिसने किताबों की महक और इंटरनेट की गति—दोनों को साथ-साथ महसूस किया है। इस पीढ़ी ने सामाजिक संबंधों को प्रत्यक्ष रूप से निभाना सीखा, दोस्तों के साथ खेल के मैदान साझा किए और फिर धीरे-धीरे डिजिटल दुनिया से जुड़ी। यही कारण है कि जेन ज़ी में संवाद, सहयोग और सामाजिक समझ अपेक्षाकृत संतुलित दिखाई देती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी जेन ज़ी ने यह समझ विकसित की कि सीखना केवल परीक्षा तक सीमित नहीं है। कौशल, व्यवहार और व्यावहारिक ज्ञान इस पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण बने। इसके विपरीत, जेन अल्फ़ा एक बिल्कुल अलग अनुभव लेकर आई है। यह पीढ़ी डिजिटल साधनों के बीच जन्मी है, जहाँ सीखना स्क्रीन के माध्यम से होता है और जिज्ञासा वीडियो व ऐप्स के ज़रिये पूरी होती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जेन अल्फ़ा तेज़ी से सीखती है और तकनीक को सहजता से अपनाती है। परंतु संपादकीय दृष्टि से यह कहना भी आवश्यक है कि अत्यधिक डिजिटल निर्भरता ने सामाजिक संवाद, धैर्य और सामूहिक गतिविधियों के लिए नए प्रश्न खड़े किए हैं। यह बहस अक्सर सुनने में आती है कि कौन-सी पीढ़ी अधिक सक्षम है। किंतु शायद सही प्रश्न यह होना चाहिए कि हम दोनों पीढ़ियों की खूबियों को कैसे जोड़ सकते हैं। जेन ज़ी का सामाजिक संतुलन और मूल्यबोध, यदि जेन अल्फ़ा की तकनीकी दक्षता और रचनात्मकता के साथ मिल जाए, तो शिक्षा और समाज—दोनों के लिए यह एक सशक्त संयोजन हो सकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा प्रणाली केवल तकनीक पर केंद्रित न होकर मानवीय संवाद, सहयोग और संवेदनशीलता को भी उतना ही महत्व दे। साथ ही, जेन ज़ी को भी समाज में मार्गदर्शक और सकारात्मक भूमिका निभाने के अवसर दिए जाएँ।

अंततः पीढ़ियाँ प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि सहभागी होती हैं। जब अनुभव और नवाचार एक-दूसरे का साथ देते हैं, तभी समाज संतुलित रूप से आगे बढ़ता है।

मोनिका मोहले, अवर सचिव

अभिमान

कण कण में भगवान, तुझे में भी मुझमें भी वही
ममता भरी सुन्दर धरा, देना ही वो जाने
उजाड़ कर धरती को, तुम क्या जीवित रह पाओगे
बन जा सिर्फ इंसान तू बंदे, मत कर अभिमान रे बंदे
मन की आवाज सदैव ही सच्ची, सही राह पा जाओगे
मन तुला में तोल कर देखो, निज अपने कर्मो को
यहीं पाया, छोड़ यहीं पर, परलोक में तुम जाओगे
बन जा सिर्फ इंसान तू बंदे, मत कर अभिमान रे बंदे

साथ लाया क्या, तन की मिट्टी भी यही मिल जाएगी
ना रहा बचपन, जवानी भी ढल जाएगी
बुढ़ापे कि नदी जाने कब, साग़र में मिल जाएगी
बन जा सिर्फ इंसान तू बंदे, मत कर अभिमान रे बंदे
संगी ना साथी कोई, जीवन चाहे तेरा या मेरा,
फिर क्यूं, व्यर्थ में? ईश्वर कृति ना चूर करो
खर- पतवार हटा, धरती अपनी को स्वर्ग सा बना लो
जीवन अनमोल व्यर्थ ना इसे गंवाओं,
अर्थ जरा सा पा जाओ
बन जा सिर्फ इंसान तू बंदे, मत कर अभिमान रे बंदे
"देव नहीं तुम, मनु बन मानवता कुछ निभा जाओ"

सुशीला तोमर, अवर सचिव

ऑपरेशन सिन्दूर

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त से ही भारतवर्ष पर विदेशी आक्रान्ताओं की कुदृष्टि बनी रही है | 1948, 1962, फिर 1971 इन वर्षो में भारत को अनेक युद्धों का सामना करना पड़ा | 1965 व 1971 में तो भारत ने पाकिस्तान के दांत खट्टे कर दिए | पाकिस्तान को समझ में आ गया कि प्रत्यक्ष युद्ध में वह भारत से भिड़ने में असमर्थ है | इसीलिए उसने परोक्ष युद्ध का सहारा अपनाया है |

पिछले कई वर्षो में भारत में अनेक आतंकी घटनाएँ हुई है | जैसे- मुंबई के गेट वे ऑफ़ इंडिया / ताज होटल पर 26/11 का हमला, उरी पर हमला इत्यादि | इसी श्रृंखला में आतंकवादियो ने पहलगाम में निर्दोष नागरिकों पर उनका नाम ओर धर्म पूछकर गोलियाँ चलाई और माँ भारती की छाती को लहूलुहान कर दिया | अनेकों सधवाओ का सिन्दूर उजाड़ डाला | उनकी पूरी तरह से यह कोशिश थी कि हिन्दुओं व अन्य धर्मो के अनुयायियों के बीच नफरत की दीवार खड़ी करा दी जाए | पूरे भारत में नस्ली झगडे हों एवं खून खराबा हो |

मारे गए यात्रियों की पत्नियों की करुण पुकार भारत सरकार को झकझोर गयी | भारत सरकार ने वहीं यह तय किया कि शत्रु राष्ट्र पाकिस्तान को इसका ऐसा मुहतोड़ उत्तर देना है कि उनकी आने वाली नस्लें भी आतंकी घटनाओं की पुनरावृत्ति करने से पहले सौ बार सोचें |

कई दिनों की तैयारी, सूक्ष्म व गहन विचार- विमर्श व गोपनीय सूचनाओं के आधार पर भारत ने एक योजना तैयार की और उस योजना के कार्यान्वयन का भार अपनी सेनाओं पर छोड़ दिया | जिस योजना के तहत यह प्रत्युत्तर दिया जाना था, उसका नाम रखा गया 'ऑपरेशन सिन्दूर' | जिसका परम उद्देश्य था पाकिस्तान के आतंकवादियों का अंत करना और उनके पीछे चलने वाले दिमाग को नेस्तनाबूत कर देना और शहीद भारतीयों की विधवाओं के सिन्दूर को उजाड़ने वालों से बदला लेना|भारत ने तय दिन पर विभिन्न प्रकार की एंटी बंकर मिसाइल, ब्रह्मोस मिसाइल आदि का प्रयोग कर पाकिस्तान की विभिन्न ऐसी इमारतों, मस्जिद आदि को ध्वस्त कर दिया, जहां आतंकवादी ठहरे हुए थे |

पाकिस्तान की सोच थी कि पाकिस्तान के मध्यवर्ती इलाके में भारत हमला नहीं कर पाएगा | परन्तु भारत ने सटीक हमला करते हुए अनेकों आतंकवादियों को न केवल मार डाला वरन उनकी शरण स्थलियों को भी पूर्णतया ध्वस्त कर दिया |

इस हमले के बाद मारे गए आतंकवादियो के लिए पाकिस्तानी सेना एवं अनेकों बचे हुए आतंवादियों को नमाज-ए-जनाज़ा पढ़ते हुए मीडिया द्वारा दिखाया गया, जो इस बात का साक्षी है कि पाकिस्तान के कई खूंखार आतंकवादी मारे गये |

पाकिस्तान द्वारा चार दिन तक जवाबी कार्रवाई की गयी, परन्तु भारतीय सेना ने न केवल उनके हर एक हमले को विफल किया वरन उनके अनेकों एयरबेस, रडार आदि को ध्वस्त कर उनकी कमर तोड़ दी | उनके रनवे इस कदर नष्ट कर डाले गए कि वे आज तक शुरू नहीं हो पाए हैं | भारत सरकार ने साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते | इसलिए, पाकिस्तान को जाने वाला पानी भी रोक दिया गया और पाकिस्तान को स्पष्टत: समझा दिया गया कि ऑपरेशन सिन्दूर अभी जारी है और यह तब तक जारी रहेगा जब तक पाकिस्तान ऐसी घटनाओं से बाज नहीं आ जाता | आखिरकार पाकिस्तान के डी.जी.एम.ओ. ने युद्ध विराम के लिए भारतीय डी.जी.एम.ओ. को फ़ोन किया, तब जाकर युद्ध विराम हुआ | लेकिन ऑपरेशन सिन्दूर अभी भी जारी है |

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाजू-ए-कातिल में है |

अनुराग अरोड़ा
अवर सचिव

वक्त बूढ़ा हो चला मेरे साथ

वक्त बूढ़ा हो चला मेरे साथ
पालकर अनगिनत ख्वाबों को साथ
मैं चलता रहा, दौड़ता रहा वक्त के साथ ||

मुद्दतों बाद जब परदेस से
घर वापस आना हुआ
बहुत कुछ बदला बदला, फिर भी,
बहुत कुछ पहचाना, अपना सा लगा ||

शहर तो शहर, गली कूँचे, घरों
की रंगत भी बदल चुकी थी
पर आवो हवा मेरे जिस्म से टकरा कर
आज भी मुझे अपना कह रही थी ||

शहर से गली - गली से - घर द्वार
में जैसे ही दाखिल हुआ, मानों
मेरी रूह को मेरे अपनों ने छुआ ||

रहा करते थे जो इकट्ठे, अपने कभी साथ - साथ
ये बड़े बड़े कमरे, यह फैले दयार
अब बस ज़हन, यादों में आस पास ||

बस हुआ रु-ब-रु तो टंगा पुराना,
घर का बिछड़ा आइना हुआ
लगा मानों मैंने उसे, और
उसने भी मुझे पहचान लिया
आँखों ही आँखों में जान लिया ||

थी जवानी तो घंटो निहारा करते थे,
मैं और आइना
सुबह, दोपहर, शाम न जाने कितनी बार
आमने सामने हुआ करते थे ||

वक्त की पड़ी धूल को मैंने आइने से पोंछ डाला
और पहले की तरह, आज फिर से
खुद को निहारा
रंगत बालों की खिचड़ी सी हो गई थी
स्याह कम, सफेदी ज्यादा झलक रही थी ||

पुछी धूल तो आइना फिर से
वापस चमक में लौट आया
देख आइने को मैं भी बरबस मुस्कुराया ||

देख कर आइना मुझसे
बहुत कुछ कहने लगा
सच क्या था, सच क्या है बताने लगा ||

यूँ तो वक्त के साथ बहुत कुछ बदल जाता है
शीशा तो क्या पत्थर भी टूट जाता है
पर मैं टुटा नहीं, तुझे भूला नहीं ||

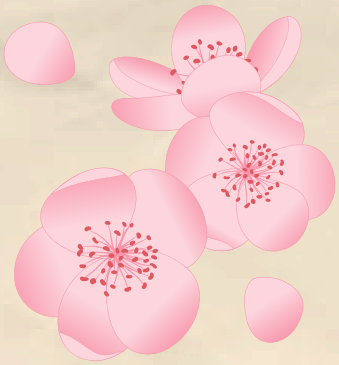

इंतजार था मुझे कि एक दिन
तू आऐगा जरुर, लौटेगा जरुर
बेशक - देर - सवेर
जवानी खो कर, बूढ़ा हो कर ||

लकीरें (किस्मत) वक्त के साथ
जरुर साथ दे रहीं होंगी
यकीनन बहुत कुछ पाने की
जुस्तुजू में लगी होंगी ||

मैं चुपचाप खड़ा सामने
आइने की सुन रहा था
कभी कटघरे में खड़ा सा
तो कभी हलफ़ नामा सा भर रहा था ||

अतीत कभी झकझोर रहा था
तो कभी मैं फिर से अतीत का पीछा कर रहा था ||

वही बचपन वही जोश
वही मंजर वही दोस्त
वही मसखरी वही सोच ||

एक एक गुजरा पल
बहुत कुछ कह रहा था
हर बीता लम्हा मानों फिर से जी रहा था ||

एक मुश्त जिन्दगी
एक तयशुदा जिन्दगी
को जी लिया मैंने या खो दिया मैंने ?
सब्ज ख्वाइशों की पैमाइश मापूं
या मंजिल को तलाश में दौड़ नापूं ?

मैं हर दम वक्त की दौड़ में शामिल रहा
कभी काफिले से आगे तो कभी काफिला आगे रहा
बहुत कुछ छूटा, तब मुट्ठी भर हासिल किया ||

आइना - मानों हौले हौले कन्धा थप थपा रहा था
और दिखा रहा था
लिखे हाशिये का एक एक
सच सामने नजर आ रहा था
जिन्दगी क्या है - असलियत बता रहा था - कि ||

मैं बूढ़ा हो चला था वक्त के साथ
वक्त बूढ़ा हो चला था मेरे साथ ||

रचना उपाध्याय
अनुभाग अधिकारी

आत्म निर्भर भारत 2047

'आत्मनिर्भर' शब्द दो शब्दों से मिलकर बनता है - 'आत्म' एवं 'निर्भर' अर्थात जो स्वयं पर निर्भर रहता हो अथवा जो दूसरों पर निर्भर नहीं रहता हो |

किसी भी देश का सपना होता है कि वह देश आत्मनिर्भर बने | एक आत्मनिर्भर देश का अर्थ है - एक ऐसा देश जो कम से कम निम्नलिखित क्षेत्रों पर दूसरे देश पर निर्भर न हो :-

1. खाद्य प्रबंधन / उत्पादन
2. उद्योग / औद्योगिक नीति (औधोगिक उत्पादन)
3. मानव संसाधन प्रबंधन
4. विदेश नीति
5. स्वयं प्रभुता
6. व्यापार (ट्रेडिंग)

भारत एक ऐसा देश है जहाँ सांस्कृतिक विकास शायद अन्य देशों के मुकाबले बहुत पहले हुआ था | शायद यही वजह रही होगी कि हमारा देश विदेशी आक्रमणकारियों का हमेशा से आकर्षण का केंद्र बना रहा | परिणाम स्वरूप पहले मंगोल, फिर मुग़ल तथा फिर अंग्रेजों का शासन कई वर्षों तक भारत में रहा | इन वर्षों के दौरान न सिर्फ आर्थिक अपितु मानसिक शोषण देशवासियों को सहना पड़ा | बाद में कई वर्षों के संघर्ष के पश्चात् सन 1947 में हमारा देश स्वतंत्र हुआ | इस वर्ष के अपने महत्व के कारण ही हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से 'आत्मनिर्भर भारत- 2047' का मंत्र देशवासियों को दिया |

हालाँकि भारत ने आजादी के 77 वर्षों में बहुत प्रगति की है परंतु अभी भी बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ भारत दूसरे देशों पर पूर्णतः व आंशिक निर्भर है | आइये इन क्षेत्रों पर चर्चा करते हैं :-

क) ऊर्जा:- ऊर्जा एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें भारत शायद पूर्णतः अन्य देशों पर निर्भर है | पेट्रोल, डीजल, गैस इत्यादि का आज भी हमारा देश अन्य देशों से आयात करता है | यह न सिर्फ देश पर आर्थिक दबाव डालता है अपितु देश के आत्मनिर्भर बनने के सपने में भी बाधा डालता है |

ख) खाद्य उत्पादन:- यह दूसरा ऐसा क्षेत्र है जो भारत के आत्मनिर्भर बनने के मार्ग में रुकावट डालता है | यूं तो भारत विश्व के सबसे बड़े खाद्य उत्पादक देशों में से एक है | हरित क्रांति के बाद से तो अनाज इत्यादि में भारत आत्म निर्भर बना है परंतु कुछ ऐसी खाद्य फसलें जैसे दालें, खाद्य तेल इत्यादि ऐसी आवश्यक खाद्य फसलों में आती हैं जिनका कुछ मात्रा में भारत को आयात करना पड़ता है |

ग) औद्योगिक उत्पादन:- प्रधानमंत्री मोदी ने 'मेक इन इंडिया' का मंत्र देकर भारत को औद्योगिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने का सपना दिया है | परंतु यह सपना तभी सार्थक होगा जब औद्योगिक उत्पाद न सिर्फ देशीय हो बल्कि उन पर 'मेड इन इंडिया' की मुहर लगी हो |

घ) विदेश नीति:- भारत आज भी कुछ क्षेत्रों में पूर्णतः निर्भरता के कारण विदेशी नीति में संप्रभु नहीं बना है | यह क्षेत्र है जैसे हथियार, जहाज़ रानी इत्यादि जिनका शायद 90% आयात भारत आज भी करता है जिसके कारण भारत की विदेश नीति स्वयं प्रभु नहीं बन पायी है |

ङ) व्यापार नीति:- व्यापर नीति बहुत हद तक उत्पादन पर निर्भर है जैसा की ऊपर बिन्दुओं में बताया गया है कि भारत आज भी कई क्षेत्रों में निर्भर है इस कारणवश भारत की व्यापार नीति भी आत्मनिर्भर नहीं बन सकी है |

समाधान

भारत को आत्मनिर्भर बनाने का सपना जो प्रधानमंत्री ने दिखाया है, वह निम्नलिखित कुछ समाधानों से सन 2047 तक पूर्ण किया जा सकता है:-

1. जनसंख्या नियंत्रण
2. हरित ऊर्जा उत्पादन अथवा इलेक्ट्रिकल या सौर-ऊर्जा चलित वाहनों को बढ़ावा
3. परंपरागत ऊर्जा का रिप्लेसमेंट ढूँढना
4. लघु उद्योगों को बढ़ावा
5. भ्रष्टाचार पर रोक
6. मानव संसाधन प्रबंधन
7. सब्सिडी इत्यादि पर नियंत्रण
8. किसानों/ कृषि को आत्मनिर्भर बनाकर
9. पिछड़ों को समान मौके देना
10. उचित विदेश नीति

निष्कर्ष:-

भारत का आत्मनिर्भर बनने का स्वप्न हर देशवासी का सपना है | परंतु इसके लिए सभी को प्रयासरत होना होगा | यह केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि हर देशवासी की व्यक्तिगत व सामूहिक जिम्मेदारी है | व्यक्तिगत लालच को छोड़कर देश भावना से किया गया हर कार्य हमें सन 2047 में आत्मनिर्भर देश अवश्य बनाएगा |

हिमांशु कुमार गौतम

सहायक अनुभाग अधिकारी

वो तो मेरी माँ ही थी

हँसती थी खुद और मुझे हँसाती थी,
मेरे रोने पर वो खुद भी रो जाती थी
मेरे मुस्कुराने पर वो भी
खिलखिला कर मुस्कुराती थी
न जाने दुनिया के कौन से कोने में
वो अपना दिल का दर्द छुपाती थी
दोस्तों और कोई नहीं वो, वो तो मेरी माँ थी

जब चोट लगती थी मुझे तो
वो अपना दिल दुखाती थी
मेरी पसंद के खिलोने मुझे वो दिलाती थी
कीमत कुछ भी उनकी पता नहीं
पैसे कैसे वो कमाती थी, दोस्तों और कोई नहीं
वो, वो तो मेरी माँ थी .....

जब तबियत ख़राब होती थी मेरी तो वो मेरी नज़र उतरती थी
मैं ठीक रहूँ हमेशा ईश्वर से दुआ वो मांगती थी
जब दिल की कोई बात करनी होती थी उनसे तो
मेरी सच्ची दोस्त वो बन जाती थी
दोस्तों और कोई नहीं वो, वो तो मेरी माँ थी .....
मेरी खुशियों में शामिल होकर मेरी हिम्मत वो बढाती थी

मुझे खुश देख कर हमेशा वो मुस्कुराती थी
मेरी आँखों में आसू आने पर न जाने वो खुद क्यों रो जाती थी
न जाने इस दुनिया में वो कौन से कोन से आती थी
दोस्तों और कोई नहीं वो, वो तो मेरी माँ थी .....

विजय कुमार, डी.ई.ओ.

प्रदूषण

प्रदूषण का अर्थ है पर्यावरण में हानिकारक पदार्थों का प्रवेश जो न सिर्फ पर्यावरण अपितु पृथ्वी पर रहने वाले जीव-जंतुओं के स्वास्थ्य पर प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः बुरा प्रभाव डालते है | प्रदूषण से पर्यावरण के सभी अवयव वायु, जल, भूमि और ध्वनि सभी प्रभावित होते हैं।

भारत एक विकासशील देश है, जहाँ उद्योगों, वाहनों और जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। इस प्रगति के साथ-साथ प्रदूषण की समस्या भी गंभीर होती जा रही है। भारत में वायु प्रदूषण सबसे बड़ी समस्या बन चुका है। बड़े शहरों में बढ़ती गाड़ियों की संख्या, कारखानों से निकलने वाला धुआँ, खेती से निकलने वाले शेष जैसे पराली इत्यादि जलाना और निर्माण कार्य इसके प्रमुख कारण हैं। इससे दमा, फेफड़ों के रोग और हृदय संबंधी बीमारियाँ बढ़ रही हैं। दिल्ली जैसे शहरों में वायु गुणवत्ता अक्सर खतरनाक स्तर तक पहुँच जाती है।

जल प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या है। नदियों में औद्योगिक कचरा, घरेलू गंदगी और प्लास्टिक फेंके जाने से जल स्रोत दूषित हो रहे हैं । गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियाँ आज प्रदूषण का शिकार हैं। दूषित जल पीने से हैजा, टाइफाइड और पेचिश जैसी बीमारियाँ फैलती हैं।

भूमि प्रदूषण का कारण रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और प्लास्टिक कचरे का अत्यधिक उपयोग है। इससे मिट्टी की उर्वरता घटती है और फसलों की गुणवत्ता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

ध्वनि प्रदूषण भी शहरी क्षेत्रों में एक बड़ी समस्या है, जो वाहनों, लाउड स्पीकरों और मशीनों के कारण होता है। इससे मानसिक तनाव, अनिद्रा और सुनने की क्षमता पर असर पड़ता है।

प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सरकार और जनता दोनों को मिलकर प्रयास करने होंगे। अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाने चाहिए, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग बढ़ाना चाहिए और स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को अपनाना चाहिए। प्लास्टिक का उपयोग कम करना और कचरे का सही निपटान भी आवश्यक है। साथ ही, लोगों में जागरूकता फैलाना बहुत जरूरी है।

निष्कर्तः यदि समय रहते प्रदूषण पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो इसका गंभीर प्रभाव मानव जीवन और प्रकृति दोनों पर पड़ेगा। स्वच्छ और सुरक्षित भारत के लिए हमें पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लेना होगा ।

हिमांशु कुमार गौतम,

सहायक अनुभाग अधिकारी

लज्जा को लाज सताती

नवयौवन बूट-कली रौंधा, फिर, फूल नहीं खिल पाएगा
हैवानियत रंगे सियार कि, देख धड़कन दिल कि खो जाती
सिसकी-चिल्लाहट, आंख के आंसू , लहू टपकता जख्मे तन मन से,
क्या मासूमियत देख दिल नहीं पिघला, क्यों कलेजा नहीं कांपा
लज्जा को लाज सताती, हे मुरारी, तुम बस अब आ जाओ,
दु:ख- संकट विकट विराल भारी

नर मानव रूप ले, नाच रहे कुटिल, नरपिशाच
कृत पर तेरे, सुन दानव ... दिमाग सुन्न, जिव्हा मेरी बर्फ सी
आँख पत्थर, दिल रोता, धड़कन मेरी गुम हो जाती
दानव भी हैरान देख तेरी हैवानियत, कुछ तो लज्जा जाता
पर निर्लज को लाज क्यों नहीं, जरा भी नहीं आती
लज्जा को लाज सताती , हे मुरारी, तुम बस अब आ जाओ,
दु:ख- संकट विकट विराल भारी

जिया नहीं बचपन, यौवन अभी ना आया,
तन बूढ़ा होगा सभी का, आत्मा ले नवरूप, फिर तस्वीर दिखाएगी
नरभक्षक तुम सभी से, नरक की अग्नि भी घृणा कर
खुद को, अपमानित पाएगी
लज्जा को लाज सताती , हे मुरारी, तुम बस अब आ जाओ,
दु:ख- संकट विकट विराल भारी

वक्त हाँ ! वक्त कि ही नहीं उम्र की भी उम्र होती है
बचपन बीता, आई जवानी, वृद्ध अवस्था भी
जीवन परिपक्वता की कहती एक कहानी
लज्जा को लाज सताती , हे मुरारी, तुम बस अब आ जाओ,
दु:ख- संकट विकट विराल भारी

सुशीला तोमर
अवर सचिव

आपदा प्रबंधन

कोई देश कितना विकसित है , यह उस देश के आपदा प्रबंधन पर निर्भर करता है | यह तो प्रकृति का नियम है कि पृथ्वी पर यदि कोई आपदा आती है तो यह किसी को भी पहले से ज्ञात नहीं हिता है | हमारे देश भारत में भी समय- समय पर प्रतिवर्ष आपदाएँ आती रहती हैं | विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है जिसमें आपदाएँ नहीं आती हो | अब सवाल यह उत्पन्न होता है कि इन आपदाओं से कैसे निपटा जाये अर्थात् आपदा प्रबंधन कैसे किया जाये |

हमारे देश मे कई तरह की आपदाएं हो जाती है - जैसे बाढ़ का आना, आंतकवादियों का अचानक हमला, अनाज की कम पैदावार, रेल दुर्घटना, हवाई जहाज दुर्घटना, धर्म के नाम पर दंगे इत्यादि | हमारे देश मे इन आपदाओं से निपटने के लिए सरकार बहुत अच्छा प्रबन्ध करती है | हमारे देश मे तो इन आपदाओं के प्रबंधन में हमारे देशवासियों का भी योगदान होता है |

जो भारतवासी आर्थिक रूप से सक्षम होता है वह ऐसी आपदाओं के प्रबन्धन के लिए आर्थिक रूप से मदद भी करता है और जो व्यक्ति आर्थिक मदद नहीं कर सकता व शारीरिक तौर पर आपदा प्रबंधन में सहायता प्रदान करता है | हमारे देश में आपदा प्रबंधन हेतु पहले से ही तैयारी कर ली जाती है |

जैसा कि सभी को मालूम है कि हमारे देश में प्रतिवर्ष बाढ़ का आना तय है | यह बाढ़ ज्यादातर उत्तराखंड, शिमला, जम्मू कश्मीर, बिहार व पंजाब आदि राज्यों में आती है | हमारे देश में बाद का आन एक मुख्य आपदा है | जैसे ही हमारे देश में बारिश का आना शुरू होता है तो भारत सरकार पहले से ही इस आपदा से निपटने का सारा इंतजाम करके रखती है, जिससे हमारे देश की वासियों के जान-माल का नुकसान न हो |

आपदा प्रबंधन हमेशा ऐसा होना चाहिए जिससे कि किसी भी इंसान या जानवर की जान आसानी से बचाई जा सके | हमारे देश में आपदा प्रबंधन के लिए समय - समय पर आवश्यक ट्रेनिंग आदि भी सभी देशवासियों को दी जाती है ताकि आपदा के समय सभी की जान और माल आदि को आसानी से बचाया जा सके |

आपदा प्रबंध किसी भी देश की वह कला है जिससे पता चलता है कि वह देश कितना विकसित है और उस देश की सरकार वास्तव में एक कामयाब सरकार है | अंत में यही कहा जा सकता है कि सभी देशों की सरकारों को अपने देशवासियों की भलाई के लिए आपदा प्रबंधन के लिए कठोर व अच्छे कदम उठाने चाहिए ताकि उस देश के विकास में भविष्य में कोई बाधा न आये | अत: आपदा प्रबंधन एक कला है जो की देश को विकास की और ले जाती है |

सतीश पाल सिंह

अनुभाग अधिकारी

नौकरी की जिन्दगी

सुबह जल्दी उठने में, नींद से लड़ाई है,
टिफिन में क्या ले जाए, ये बात ही मुश्किलें ले आयी है,
भागती जिन्दगी में बस, उस दिन की तलाश है,
महीने के अंतिम दिनों में, सैलरी आने की आस है,

कंधो पर बोझ है मेरे, जिम्मेदारियों का भारी,
और जेब में हैं मेरे बस, तारीखों की सवारी,
बॉस की डांट और मीटिंग की घडी,
हर दिन की सुबह जैसे कोई सजा कड़ी,

कभी माँ को वक्त नहीं दिया,
तो कभी यारों से हुई दूरी,
कभी बीवी की हुई शिकायतें ज्यादा,
तो कभी बच्चों की रह गयी ख्वाइशें अधूरी,
मन तो कहे मेरा की छोड़ दूँ सब कुछ आज ही,
EMI, किराया और जिम्मेदारियों की
आवाज भी बाकी है

सोचता हूँ - क्या बस यही है जीवन मेरा,
कंप्यूटर की स्क्रीन और संघर्ष भरा ये जीवन मेरा,
मगर फिर वही हिम्मत दिल को संभालती है,
कुछ दिन बाद सैलरी आने की उम्मीद ही,
मेरा हर दिन हँसते हुए निकालती है

विजय कुमार, डी.ई.ओ.

मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण

किसी भी राष्ट्र के लिए चुनावी प्रक्रिया एक महतवपूर्ण सांविधानिक क्रियाकलाप है जिससे उस राष्ट्र की वर्त्तमान एवं भविष्य तय होता है | राज्य एवं देश की विभिन्न सांविधानिक संस्थाएं गाहे बगाहे आवश्यकतानुसार महतवपूर्ण बदलाव करती रहती हैं जिससे हमारे देश की प्रजातंत्र की बुनियाद और भी मजबूत हो सके एवं देश और भी अधिक शक्ति से विकास कर सके |

हालांकि कभी -कभी जब कोई सांविधानिक संस्था इस प्रकार की महत्त्वपूर्ण कार्य का शुभारंभ करती है तो एक विवाद जैसी स्थिति भी बन जाती है एवं देश के नागरिकों के मन में एक संदेह उत्पन्न हो जाता है | ऐसा ही एक विवाद से भरा पर नि:संदेह एक शुभ कार्य का प्रारम्भ चुनाव आयोग द्वारा किया गया है जो कि मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण / पुनरावलोकन का है जो अभी कुछ ही महीने पहले बिहार राज्य से शुरू हुआ था पर यह पूर्ण रूप से विवादित बन गया था |

वास्तव में विशेष गहन पुनरीक्षण चुनाव प्रक्रिया से पूर्व एक ऐसा कार्य है जिससे पुराने मतदाता सूची में नाम जोड़े एवं एवं नाम काटे जाते हैं| हम सभी जानते हैं कि हर वर्ष बहुत सारे मतदाताओं की मृत्यु हो जाती है एवं बहुत सारे नए मतदाता 18 वर्ष के होते हैं जिससे वे मत देने योग्य होते है एवं इनके नाम मतदाता सूची में जोड़े जाते हैं | तो इससे प्रतीत होता है कि यह बेहद आवश्यक है कि देश में सवच्छ चुनाव संपन्न कराने के लिए कम से कम हर दस वर्ष में विशेष गहन पुनरीक्षण कराई जाए | इस शुभ कार्य के लिए प्रशिक्षित बूथ लेवल अधिकारी (जिसमें सरकारी शिक्षक, आंगनवाडी, सरकारी कार्यालय के कर्मचारी आदि) को ड्यूटी पर लगाया जाता है | यह जिम्मेदारी से भरा एवं बहुत ही परिश्रम का कार्य होता है एवं इसमें काफी समय भी लगता है | तय समय के बाद यह रिपोर्ट बूथ लेवल अधिकारी चुनाव आयोग को सोंपती है |

विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य यह पहली बार नहीं हो रहा है बल्कि 1952, 1956, 1961, 1965,1966 ,1987 एवं आखरी समय 2003-04 में संपन्न हो चुका है | परन्तु पहले कभी इस पर इतना विवाद नहीं हुआ था | नव आयोग ने विशेष गहन ने इस पुनरीक्षण का कार्य बिहार चुनाव से पूर्व अक्टूबर 2025 में शुरू किया था पर जैसे ही शुरू हुआ पुरे देश में विपक्षी पार्टियों ने शोर शराबा शुरू कर दिया एवं इस पर बहुत ही विवाद बढ़ गया बल्कि विपक्षी पार्टियों ने इसे सुप्रीम कोर्ट में चैलेंज भी कर दिया है | सुनवाई में कोर्ट ने इस एक्टिविटी पर रोक नहीं लगायी पर कुछ सुझाव अवश्य दिए जिसे आयोग ने पालन करते हुए इस कार्य को 31 दिन के रिकॉर्ड समय में में समाप्त किया एवं चुनाव भी सकुशल समाप्त हुआ | यहाँ उल्लेखनीय है कि बिहार में कुल 90 लाख से ऊपर नाम कटे थे जिसमें लगभग 30 लाख नाम जोड़े भी गए थे जिससे मतदाता सूची में कुल काटने वाले नाम लगभग 60 लाख हुए थे |

विशेष गहन पुनरीक्षण की दुसरे चरण का भी अक्टूबर 2025 से 12 राज्यों में शुरुआत हुआ है जिसमें पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, तमिल नाडू, केरला, मध्य प्रदेश, गोवा, असम आदि शामिल हैं| इसका मसौदा 5 दिसम्बर, 2025 को चुनाव आयोग के वेबसाइट पर डाला गया है एवं इससे सम्बंधित विवाद को 7 फरवरी, 2026 तक निपटारा करने का समय सीमा दिया गया है | यहाँ यह उल्लेख करना अति-आवशयक है कि बंगाल में 93 लाख लोगों का नाम कटा है | इसके अतिरिक्त तमिलनाडु में भी यह कार्य संपन्न हुआ है जिसमे 90 लाख से अधीक लोगों का नाम कटा है |

अज़मत हुसैन,
सहायक अनुभाग अधिकारी

रूस हमारा भरोसेमंद मित्र

प्राचीन समय से यह प्रथा प्रचलन में है की राज्यों को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए कुछ भरोसेमंद मित्रों की आवश्यकता रही है, क्योंकि राजनीति मे शत्रुता स्वभाविक है। कौटिल्य जो प्राचीन भारतीय राजनीति में एक महान राजनीतिज्ञ हुए है । उनके मत के अनुसार आपका पडौसी राज्य जो आपसे अपनी सीमांए साझा करता है, वो हमेशा आपका शत्रु होता है एवं उसका पडौसी राज्य आपका मित्र होगा क्योंकि शत्रु का शत्रु मित्र हुआ करता है।

यहां हम अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की बात करे तो कहा जाता है कि 'देशो के बीच ना कोई स्थाई मित्रता होती है और न ही स्थाई शत्रुता होती है होते है तो केवल हित' परंतु भारत और रूस के संबंधो ने इस परिभाषा को कई बार चुनौती दी है। विगत कई दशकों का इतिहास गवाह है कि भारत और रूस के बीच रिश्ता केवल रणनीतिक समीकरणों तक सीमीत नहीं रहा बल्कि यह एक अटूट भरोसे की नींव है जिसने विगत कई दशको से अपनी प्रसांगिकता बनाए रखी हुई है।

ऐतिहासिक विश्वास की यह नींव भारत रूस मित्रता की जडें 1971 की भारत-सोवियत शांति संधि और सहयोग में निहित है। जब 1971 के पाक युद्ध के दौरान भारत वैश्विक दबाव का सामना कर रहा था, पाकिस्तान की सहायता के लिए अमेरिका ने अपनी नौसेना का सातवां बेडा बंगाल की खाडी में भेजा और सैन्य सहायता प्रदान की तब भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने सोवियत संघ से मदद मांगी, सोवियत संघ ने परमाणु पनडुब्बीयों के साथ अपना नौसैनिक बेडा भेजकर ना केवल भारत की संप्रभुता की रक्षा की बल्कि स्पष्ठ शब्दों में अमेरिका को चेतावनी दी की भारत पर हमला रूस की अस्मिता पर हमला समझा जाएगा, रूस संयुक्त राष्ट्र में भी भारत के लिए ढाल बनकर खडा रहा।

जब संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका और बिट्रेन ने पाकिस्तान का साथ देते हुए भारत के खिलाफ प्रस्ताव लाने की कोशिश की तो रूस ने हर बार अपरी वीटो पॉवर का इस्तेमाल कर रोक दिया। रूस ने उस दौर में भारत का हाथ थामा जब पश्चिमी देश भारत की क्षमताओं पर संदेह कर रहे थे। सहयोग के विविध आयाम आज भारत और रूस की साझेदारी विशेषाधिकार प्राप्त रणनैतिक साझेदारी के शिखर पर है, इसे इस प्रकार समझा जा सकता है :-

- रक्षा और तकनीक में रूस ने भारत को केवल खरीदार नहीं बल्कि सह निर्माता माना है। ब्रहमोस मिसाइल इसका सबसे जीवंत उदाहरण है। मिग 21 फाइटर जेट विमान और एस 400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम की डील ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अपने राष्ट्रीय हितों के लिए किसी भी वैश्विक दबाव के आगे नहीं झुकेगा। ऑपरेशन सिंदूर के बाद जब पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया तो यह एयर डिफेंस सिस्टम बहुत ही कारगर साबित हुआ था।

- यूक्रेन संकट के बाद जब वैश्विक स्तर पर तेल की कीमतें आसमान छू रही थीं तब रूस ने रियायती दरों पर कच्चें तेल की आपूर्ति कर भारतीय अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान की । कुडनकुलम परमाणु परियोजना भारत की स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में रूसी सहयोग का मील का पत्थर है।

- इसरो के प्रारंम्भिक सफर से लेकर गगनयान के लिए भारतीय अंतरिक्ष यात्रियो के प्रशिक्षण तक रूस हमारा मार्गदर्शक रहा है। भारत का पहला उपग्रह आर्यभट्र रूसी राकेट से अतंरिक्ष में भेजा गया था। इसके अतिरिक्त भारत से अंतरिक्ष में जाने वाले पहले व्यक्ति राकेश शर्मा ने भी रूसी अंतरिक्ष यान से यात्रा की थी।

- बदलती वैश्विक व्यवस्था और चुनौतियो में वर्तमान समय में चीन रूस की बढती नजदीकी और रूस यूक्रेन संघर्ष में नई कूटनीतिक चुनौतियाँ सामने आयी है।

हालांकि भारत ने ऊपरी स्वतंत्र विदेश नीति पर चलते हुए यह स्पष्ट किया है कि रूस के साथ उसके संबंध किसी तीसरे देश के प्रभाव में नहीं आएगे। भारत और रूस मिलकर ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) सहयोग संगठन जैसे मंचो के माध्यम से विश्व में शांति सहयोग और सुरक्षा का निर्माण करना चाहते है जहॉ शक्ति किसी एक केन्द्र में निहित ना हो ।

हम कह सकते है कि भारत रूस संबंध वक्त की रेत पर बने अस्थायी निशान नही बल्कि पत्थर की लकीर की तरह है। यह दोस्ती साझा मूल्यों, एकता, अखण्डता, एक दूसरे की संप्रभुता की रक्षा पर आधारित है, दोनों देशो ने परस्पर यह सिद्व किया है कि वे हर परिस्थिति में एक दूसरे के साथी है। आने वाले समय में यह साझेदारी एशिया और पूरे विश्व में शांति और संतुलन बनाए रखने के लिए बनी रहेगी।

सौरभ मुद्गल,
डी.ई.ओ.

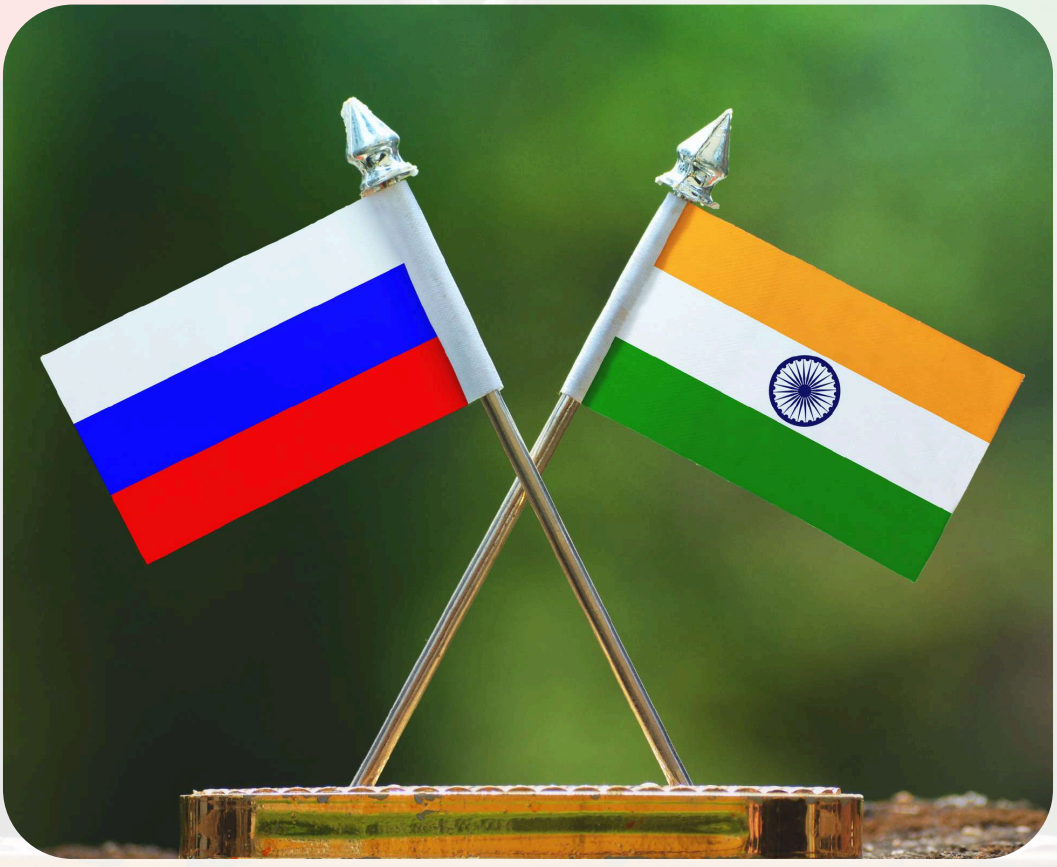

किरदार एक बेटे का

अपनी जिंदगी में किरदार निभाए जा रहा हूँ,
पता नहीं जिंदगी कब जीने को मिलेगी
फिर भी बस जिये जा रहा हूँ,

माता-पिता के लिए पुत्र बनकर उनकी
आज्ञा का पालन किये जा रहा हूँ,
उनके बुढ़ापे का सहारा बने जा रहा हूँ,
मैं तो बस एक पुत्र होने का किरदार निभाए जा रहा हूँ,

बड़े भाइयों -बहनों का मान-सम्मान किये जा रहा हूँ,
उनके गुस्से को सहे जा रहा हूँ,
मैं तो बस एक छोटे भाई होने का
किरदार निभाए जा रहा हूँ,

जब बाते होती है मेरे हमसफ़र की तो
उनका साथ हर पड़ाव पर दिए जा रहा हूँ,
जिंदगी में उथल-पुथल बहुत है
फिर भी बस चले जा रहा हूँ,
मैं तो बस एक अच्छा हमसफ़र होने
का किरदार निभाए जा रहा हूँ,

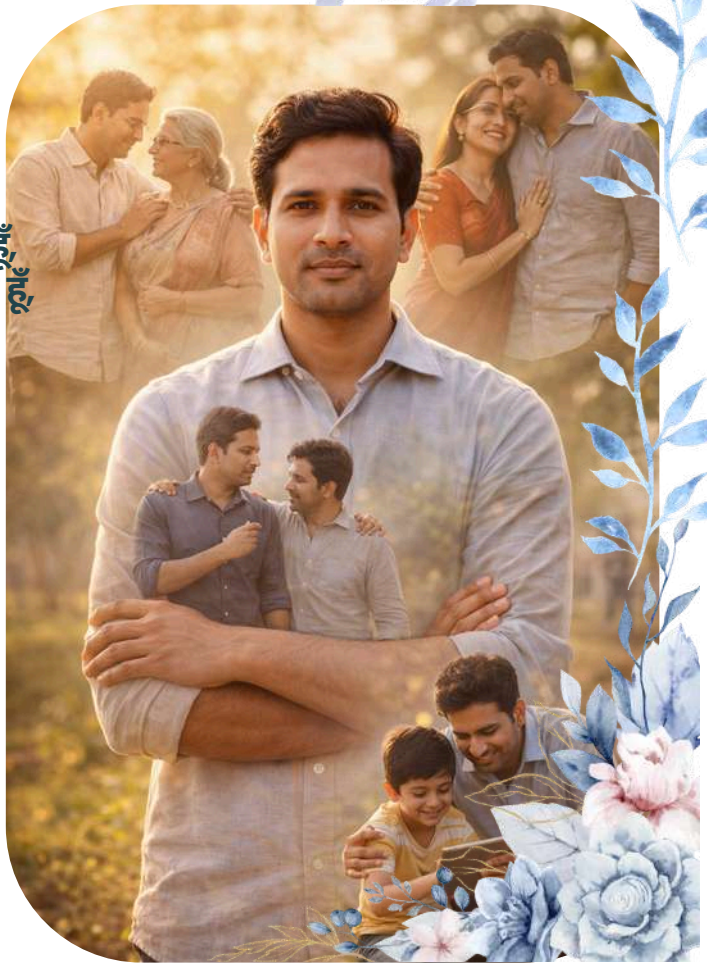

अंत में आते है मेरे बच्चे तो उनकी
सब इच्छा पूरी किये जा रहा हूँ,
उनके सुनहरे भविष्य के लिए कमाये जा रहा हूँ,
उनकी सब गलतियों को माफ़ भी किये जा रहा हूँ,
मैं तो बस एक अच्छा पिता होने का
किरदार निभाए जा रहा हूँ,

जिंदगी कब जी है मैंने अपने लिए
बल्कि सबके लिए जिये जा रहा हूँ,
मैं तो बस अपना किरदार निभाए जा रहा हूँ.
बस अपना किरदार निभाए जा रहा हूँ.

विजय कुमार
डी.ई.ओ.

भरतनाट्यम

भरतनाट्यम भारत का एक प्राचीन और प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य है इसकी उत्पत्ति तमिलनाडु राज्य में हुई थी यह नृत्य पहले मंदिरों में देवदासियों द्वारा भगवान की पूजा और भक्ति के रूप में किया जाता था यह नृत्य भारतीय संस्कृति और परम्परा का प्रतीक है |

मुख्य भाग:

भरतनाट्यम नृत्य भाव, राग और ताल पर आधारित होता है इसमे हाथों की विभिन मुद्राओ, आँखों की गति और चेहरे के भावों द्वारा भावनाएं व्यक्त की जाती है नृत्य करते समय पैरों की लयबद्ध थाप और घुंघरुओं की आवाज नृत्य को आकर्षक बनाती है | पहले भरतनाट्यम मंदिरों में देवदासियों द्वारा भगवान की पूजा के रूप में किया जाता है समय के साथ यह मंचीय कला बन गया| इस नृत्य में कर्नाटक संगीत का प्रयोग होता है, नर्तकियां विशेष वेशभूषा, आभूषण और

श्रृंगार धारण करती है इस नृत्य में देवी देवताओं, रामायण और महाभारत से जुडी कथाओं को अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है | भरतनाट्यम केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह अनुशासन, धैर्य और शरीर को स्वस्थ रखता है तथा मन में शांति, एकाग्रता और आत्मविश्वाश बढाता है |

आज भरतनाट्यम न केवल भारत में, बल्कि विदेशो में भी बहुत लोकप्रिय कला है | अनेक कलाकार इस नृत्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपरा को विश्व स्तर पर प्रस्तुत कर रहे है इस प्रकार भरतनाट्यम हमारी संस्कृतिक विरासत का अमूल्य हिस्सा है, जिसे संरक्षित करना और आगे बढाना हम सभी का कर्तव्य है भरतनाट्यम नाट्य शास्त्र पर आधारित नहीं है, बल्कि "अभिनय दर्पण" पर भी आधारित है जिसे नंदीकेश्वर द्वारा लिखित माना जाता है नाट्य शास्त्र की तरह, अभिनय दर्पण भी मुद्राओ शरीर के संचालन और अन्य हाव-भाव पर एक विस्तृत ग्रंथ है, जो इस कला का आधार है |

भरतनाट्यम की विशेषताएँ

तीन मुख्य भाग : इसमें नृत्य (अमूर्त लयबद्ध गति), नृत्य (भावनात्मक कहानी कहना), और नाट्य (नाटकीय अभिनय) शामिल है |

शारारिक मुद्राएँ: अर्मंदी (कमर पर आधारित मुद्रा), हाव-भाव (मुद्राएं) और आँखों की हरकतें (अभिनय) महत्वपूर्ण है |

संगीत: कर्णाटक शाश्त्रीय संगीत पर आधारित, जिसमें मृदंगम, वीणा और वायलिन जैसे वाद्य यंत्र का प्रयोग होता है |

भरतनाट्यम की कहानियाँ :

इश्वर की भक्ति: शिव, विष्णु, कृष्ण और देवी देवताओं की स्तुति

पौराणिक कथाएँ: रामायण, महाभारत और पुराणों के प्रसंग

श्रृंगार रस: प्रेम ओर विरह की भावनाएं.

नैतिक कहानियाँ : सद्गुण और बुराई के बीच का संघर्ष.

हेमा गौतम

डी.ई.ओ.

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल की नई बिल्डिंग 'चयन भवन' का उद्घाटन

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल की वार्षिक रिपोर्ट 2024-25 का माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा विमोचन

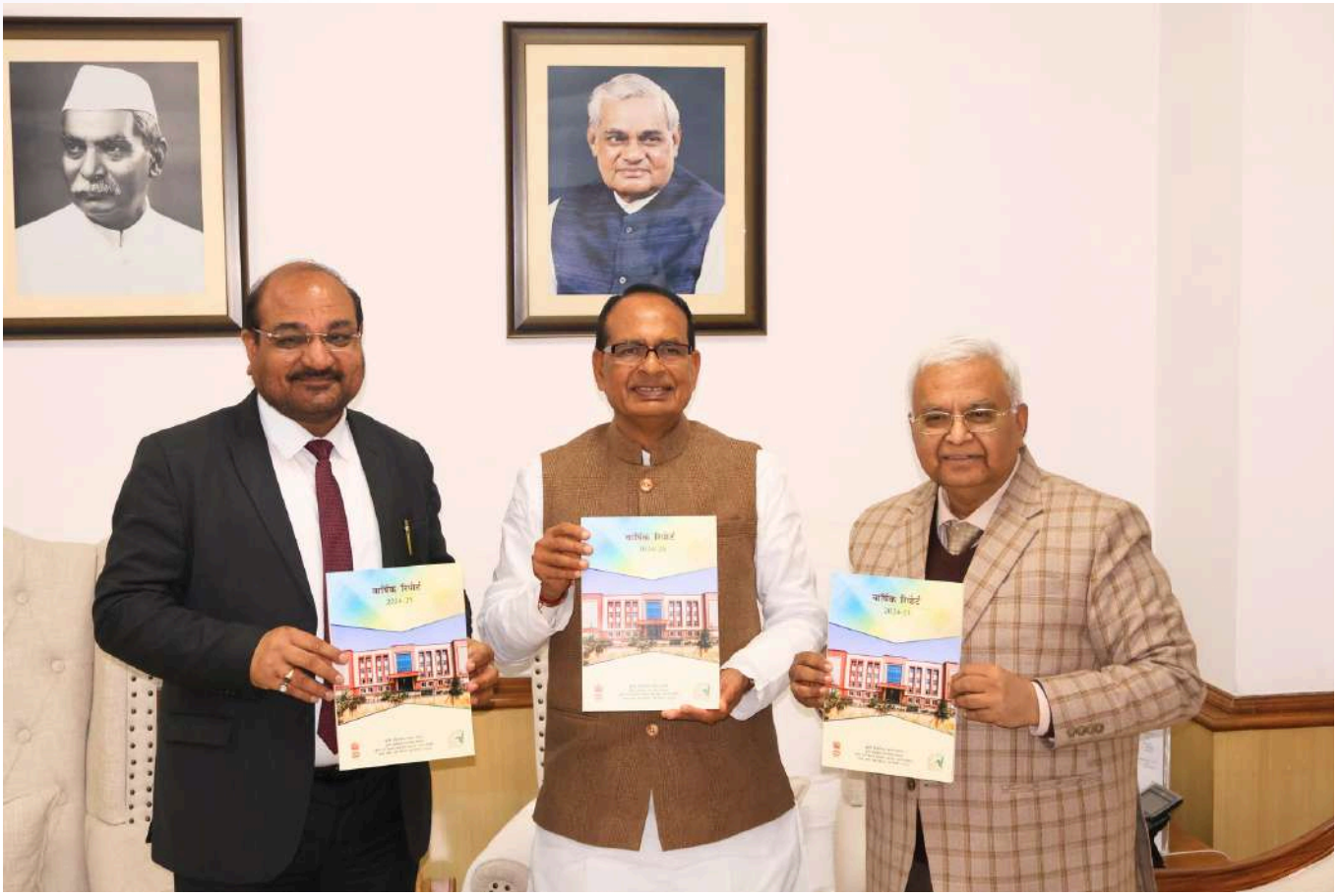

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल का 53वां स्थापना दिवस

ASRB
1973

AGRICULTURAL

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल का 52वां स्थापना दिवस

डॉ शिव प्रसाद किमोठी, सदस्य, पशु विज्ञान, कृ.वै.च.मं, विदाई समारोह

डॉ. बी.एस. द्विवेदी, सदस्य, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, कृ.वै.च.मं, विदाई समारोह

डॉ मेजर सिंह, सदस्य, पादप विज्ञान, कृ.वै.च.मं, विदाई समारोह

डॉ. रविशंकर सी.एन., सदस्य, पशु एवं मतस्य विज्ञान, कृ.वै.च.मं, स्वागत समारोह

डॉ. सुनील कुमार अम्बस्त., सदस्य, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन विज्ञान, कृ.वै.च.मं, स्वागत समारोह

नये निदेशक, कृ.वै.च.मं. का स्वागत

निदेशक, कृ.वै.च.मं. का विदाई

स्वच्छता अभियान 2025

राजभाषा हिन्दी पखवाडा 2025

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल
"राजभाषा हिन्दी पखवाडा"

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल
"राजभाषा हिन्दी पखवाडा"
एवं

भारतीय संविधान दिवस 2025 शपथ ग्रहण समारोह

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल में भारती 'बहुभाषी अनुवाद सारथी' की कार्यशाला